सितार-मार्ग

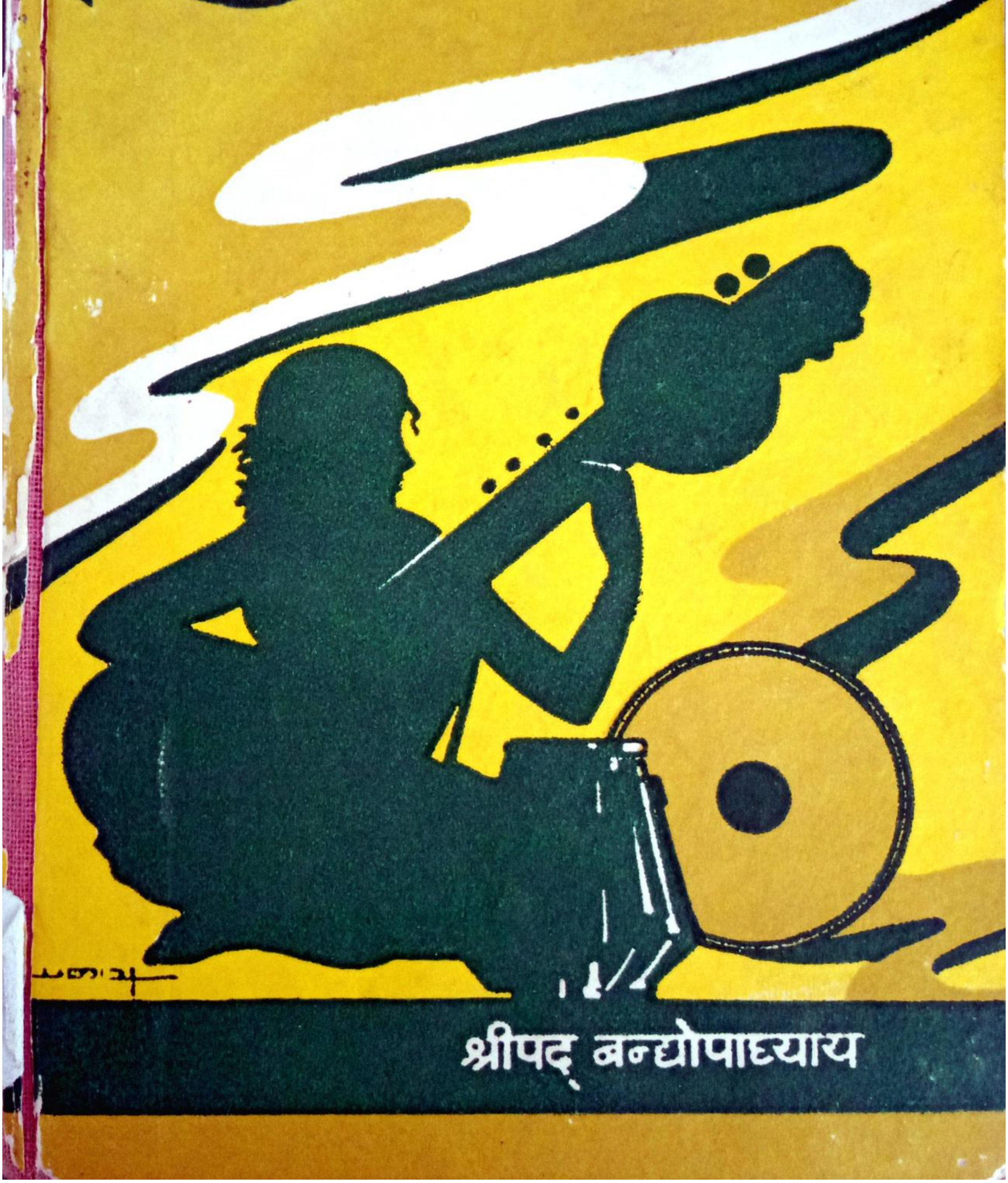

श्रीपद बन्द्योपाध्याय

Scanned by TapScanner

अनुक्रमणिका

अध्याय		पृष्ठ
1.	सौन्दर्य-विज्ञान (कला, ललितकला, प्रकृति एवं पुरुष, रस सुस्वर उत्पादन विधि, अभ्यास क्रम)	1-9
2.	प्राचीन, मध्यकालीन और अर्वाचीन स्वर सिद्धान्त (वेदगान, शिक्षोक्त स्वर, माण्डूकीय शिक्षा में स्वरों के रूप, वेदोक्त स्वराघात के साथ शिक्षोक्त स्वरों की तुलना, मध्यकालीन स्वर सिद्धान्त, शरीरज और यन्त्रज स्वर, भावात्मक और क्रियात्मक कला, पारिजातोक्त स्वर, नाट्य शास्त्रोक्त श्रुति और स्वर स्थान, रत्नाकरोक्त श्रुति और स्वर स्थान, एक स्वर के भिन्न नाम, रामामात्य के श्रुति-स्वर स्थान, सोमनाथ के श्रुति और स्वर स्थान, लोचन और अहोबल के शुद्ध और विकृत स्वर, षड्ज पंचम भाव)	10-26
3.	राग प्रकरण (जाति व राग लक्षण, राग के प्रमुख नियम, विवादि स्वर, ग्रन्थोक्त राग विवरण, रत्नाकरोक्त राग संख्या, रागों के नामकरण, सम्पूर्ण जाति, वक्र सम्पूर्ण-बिलावल मेल, कल्याण मेल, खमाज मेल, भैरव मेल, पूरिया धनाश्री व पूर्वी मेल, मारवा मेल, काफी मेल, आसावारी मेल, भैरवी मेल, कल्याण मेल)	27-39
4.	ताल प्रकरण (काल के विभिन्न रूप, छन्द और ताल, गण परिचय तालिका, मात्रागण परिचय तालिका, सम छन्द वृत्त व जाति प्रकरण, सम मात्रा छन्द जाति प्रकरण, प्रचलित दण्डकों का संक्षिप्त विवरण, ताल, पश्तोताल, वसन्त ताल चन्द्रक्रीड़ा, शूलफाक्ता, रूद्र, मणि, जगपाल, फरदोस्त, मल्ल, सवारी, गजझंपा, चित्र, चित्रा, विष्णु, शिखर, गजलीला, लक्ष्मी, सारस, मुकुन्द, गणेश, ब्रह्म, अतिशेखर, पंचम सवारी, ताल नाम, मात्रा संख्या एवं ताल जाति, लड़न्त)	40-72
5.	क्रियात्मक – (कल्याण मेल के 13 जन्य राग) (कल्याण मेल, चन्द्रकान्त, जयत्कल्याण, श्याम कल्याण, मालश्री)	73-120

Scanned by TapScanner

बिलावल मेल के राग 121-184

(शुद्ध बिलावल, शुक्ल बिलावल, देवगिरी, यमनी, दुर्गा, सरपर्दा, कुकुभ, हेमकल्याण, मलुहा केदार, मौड, गुणकली, पहाड़ी)

खमाज मेल के राग 185-245

(खमाज, तिलंग, रागेश्वरी, खंबावती, दुर्गा, सोरठ, गारा)

भैरव मेल के राग 246-314

(भैरव, बंगाल भैरव, शिव भैरव, आनन्द भैरव, अहीर भैरव, प्रभात भैरव, सौराष्ट्र-भैरव, गुणकरी, जोगिया, विभास, मेघरंजनी)

7. शुद्धि-पत्र अन्त में

Scanned by TapScanner